Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on **“_सूफी संप्रदाय I"Notes-3**

(for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)

सूफी संप्रदाय।

सुहरवर्दी सिलसिला

यह सिलसिला शेख शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी द्वारा स्थापित किया गया था। यह भारत में शेख बहाउद्दीन जकारिया (1182-1262) द्वारा स्थापित किया गया था। उसने मुल्तान में एक अग्रणी खानख्वाह की व्यवस्था की जिसका शासक, उच्च सरकारी अिध्कारी एवं अमीर व्यापारी दौरा किया करते थे। शेख बहाउद्दीन जकारिया ने खुलकर कबाचा वेफ विरुद्ध इल्तुतमिश का पक्ष लिया एवं उससे शेख-उल-इस्लाम ;इस्लाम वेफ नेताद्ध की उपाध् िप्राप्त की। ध्यान दें कि चिश्ती संतों वेफ विपरीत, सुहरावर्दियों ने राज्य वेफ साथ निकट संपर्वफ बनाए रखा। उन्होंने उपहार, जागीरें और यहाँ तक की चर्च संबंध्ति विभाग में भी सरकारी नौकरियाँ स्वीकार कीं। सुहरावर्दी सिलसिला दृढ़ता से पंजाब और सिंध् में

स्थापित हो गया था। इन दो सिलसिलों वेफ अतिरिक्त पिफरदौसी सिलसिला, शतारी सिलसिला, कादिरी सिलसिला एवं नख्शबंदी सिलसिला भी थे।

सूफी मत के सम्पद्राय

1-चिश्ती सम्प्रदाय,

2-सुहरावादियॉं सम्प्रदाय,

3-कादरिया सम्प्रदाय,

4-नक्शबदियॉं सम्प्रदाय,

5-अन्य सम्प्रदाय (शत्तारी सम्प्रदाय) आदि ।

सूफी मत के सिद्धांत

सूफी मत के सिद्धांत भक्ति मार्ग के सिद्धांत से मिलते जुलते है ।

1.एकेश्वरवादी - सूफी मतावलम्बियों का विश्वास था कि ईश्वर एक है आरै वे अहदैतवाद से प्रभावित थे उनके अनुसार अल्लाह और बन्दे में कोई अन्तर नहीं है । बन्दे के

माध्यम से ही खुदा तक पहुंचा जा सकता है।

2.भौतिक जीवन का त्याग - वे भौतिक जीवन का त्याग करके ईश्वर मे लीन हो जाने का उपदेश देते थे ।

3.शान्ति व अहिंसा में विश्वास - वे शान्ति व अहिसां में हमेशा विश्वास रखते थे ।

4.सहिष्णुता - सूफी धर्म के लोग उदार होते थे वे सभी धर्म के लोगों को समान समझते थे ।

5.प्रेम - उनके अनुसार पे्रम से ही ईश्वर प्राप्त हो सकते हैं। भक्ति में डूबकर ही इसं ान परमात्मा को प्राप्त करता है।

6.इस्लाम का प्रचार - वे उपदेश के माध्यम से इस्लाम का प्रचार करना चाहते थे ।

7.प्रेमिका के रूप मे कल्पना - सूफी संत जीव को प्रेमी व ईश्वर को प्रेमिका के रूप में देखते थे ।

8.शैतान बाध - उनके अनुसार ईश्वर की प्राप्ती में शैतान सबसे बाधक होते हैं ।

9.हृदय की शुद्धता पर जोर - सूफी संत, दान, तीर्थयात्रा,

उपवास को आवश्यक मानते थे।

10.गुरू एव शिष्य का महत्व - पीर (गुरू) मुरीद शिष्य के समान होते थे ।

11.बाह्य्य आडम्बर का विरोध - सूफी सतं बाह्य आडम्बर का विरोध व पवित्र जीवन पर विश्वास करते थे

12.सिलसिलो से आबद्ध - सूफी सतं अपने वर्ग व सिलसिलो से सबंध रखते थे ।

सूफी सम्प्रदाय के प्रमुख संत

ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती -

भारत में चिश्ती सम्प्रदाय के संस्थापक ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती थे इनका जन्म ईरान के सिस्तान प्रदेश में हुआ था । बचपन में उन्होंने सन्यास ग्रहण कर लिया वे ख्वाजा उस्मान हसन के शिष्य बन गये और वे अपने गुरू के निर्देश में 1190 को भारत आ गये । वे अद्वैतवाद एवं एकेश्वरवाद की शिक्षा देते हुए मानव सेवा ही ईश्वर की सच्ची भक्ति है । हिन्दु के प्रति उदार थे ।

निजामुदुदीन औलियों -

निजामुदुदीन औलियां का जन्म बदॉयू में 1236 में हुआ था । 20 वर्ष की आयु में वे शेख फरीद के शिष्य बन गये । उन्होंने 1265 में चिश्ती सम्प्रदाय का प्रचार प्रारंभ कर दिया था । वे सभी को ईश्वर प्रेम के लए प्रेरित करते थे । जो लोग उनके यहां पहुंचते थे उन्हें वे संशारीक बन्धनों से मुक्ति दिलाने में सहायता करते थे ।

अमीर खुसरो -

अमीर खुसरों का जन्म 1253 में एटा जिले के पटियाली नामक स्थान में हुआ था । वे एक महान सूफी संत थे । वे 12 वर्ष में ही कविता कहने लगे थे । उन्होंने अपने प्रयास से "तुगलक नामा" की रचना की वे महान साहित्यकार थे । वे संगीत के विशेषज्ञ थे । उन्होंने संगीत के अनेक प्रणालियों की रचना की वे संगीत के माध्यम से हिन्दू मुसलमानों में एकता स्थापित किया ।

सूफी मत का प्रभाव

सूफी मत से भारत में हिन्दू मुस्लिम एकता स्थापित हो गयी । शासक एवं शासित वर्ग के प्रति जन कल्याण के कार्यों की प्रेरणा दी गयी । संतों ने मुस्लिम समाज को आध्यात्मिक एवं नैतिक रूप से संगठित किया गया ।

References: Internet & Competitive books.